नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

उम्मीदों और अवसरों से भरा भारत

रविवार को विश्व उम्मीद दिवस मनाया गया, इस बार यह दिवस ऐसे समय आया है, जब भारत की विकास यात्रा को लेकर दुनिया की नजरें पहले से कहीं अधिक गंभीरता से टिकी हुई हैं. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हालिया न्यूजीलैंड यात्रा के दौरान वहां के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सर का यह कहना कि 'आज का भारत उम्मीदों और अवसरों से भरा देश है ', केवल एक औपचारिक कूटनीतिक टिप्पणी नहीं, बल्कि बदलते वैश्विक दृष्टिकोण का संकेत है. यह स्वीकारोक्ति बताती है कि भारत अब केवल एक विशाल बाजार नहीं, बल्कि भविष्य की आर्थिक, सामरिक और तकनीकी शक्ति के रूप में देखा जा रहा है.

पिछले एक दशक में भारत ने अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं. 25 करोड़ लोगों का गरीबी रेखा से बाहर निकलना सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की महत्वपूर्ण कहानी कहता है. तेजी से विस्तार करता मध्यम वर्ग देश की बढ़ती क्रय शक्ति, उपभोग क्षमता और आर्थिक स्थिरता का प्रतीक है. यही वर्ग आने वाले वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था को नई गति देने के साथ वैश्विक निवेशकों के लिए भी सबसे बड़ा आकर्षण बनेगा.

भारत आज दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है. वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं, युद्धों और आपूर्ति श्रृंखला की चुनौतियों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था ने उल्लेखनीय लचीलापन दिखाया है. डिजिटल भुगतान, आधार, यूपीआई, स्टार्टअप इकोसिस्टम और विनिर्माण क्षेत्र में हुए सुधारों ने भारत को नई पहचान दी है. 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसी पहलों का प्रभाव अब रक्षा उत्पादन, इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर, मोबाइल निर्माण और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में स्पष्ट दिखाई देने लगा है.

राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में भी भारत लगातार अपनी क्षमता का विस्तार कर रहा है. हाल में जारी एक वैश्विक रिपोर्ट में भारतीय वायुसेना को अमेरिका और रूस के बाद दुनिया की तीसरी सबसे प्रभावशाली वायुसेना माना जाना इस दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है. इससे स्पष्ट होता है कि भारत केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि सामरिक दृष्टि से भी अपनी स्थिति मजबूत कर रहा है. रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण और आधुनिक तकनीक पर बढ़ता जोर भविष्य के लिए और अधिक आत्मविश्वास पैदा करता है.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हालिया इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड यात्राएं भी इसी व्यापक रणनीति का हिस्सा हैं. व्यापार, निवेश, महत्वपूर्ण खनिज, रक्षा सहयोग और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत बनाने से जुड़े समझौते भारत की दीर्घकालिक आर्थिक और रणनीतिक प्राथमिकताओं को मजबूती देंगे. आज वैश्विक कंपनियां भारत को केवल उत्पादन केंद्र नहीं, बल्कि नवाचार और निवेश के भरोसेमंद साझेदार के रूप में भी देखने लगी हैं. फिर भी यह नहीं भूलना चाहिए कि अवसरों के साथ चुनौतियां भी मौजूद हैं. रोजगार सृजन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, कृषि सुधार, कौशल विकास और आय में असमानता जैसे मुद्दों पर निरंतर काम करना होगा. यदि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, तभी उम्मीदों का यह भारत वास्तव में विकसित भारत का स्वरूप ग्रहण कर सकेगा.

आज भारत के पास युवा शक्ति, तकनीकी क्षमता, लोकतांत्रिक स्थिरता और वैश्विक विश्वास. ये चारों उसकी सबसे बड़ी पूंजी हैं. आवश्यकता केवल इस बात की है कि सुधारों की गति बनी रहे, नवाचार को प्रोत्साहन मिले और समावेशी विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए. यदि ऐसा हुआ तो उम्मीदों और अवसरों से भरा आज का भारत, आने वाले वर्षों में विश्व व्यवस्था का एक निर्णायक नेतृत्वकर्ता बनकर उभरेगा.

तीजन बाई देदीप्यमान मशाल थीं

पुरु शर्मा

लोक और शास्त्र जहाँ अपनी सीमाओं को विस्मृत कर एक आदिम आलिंगन में बंध जाते हैं, वहीं पंडवानी का प्राकट्य होता है, और जब पंडवानी अपनी संपूर्ण विराटता में साकार होती है, तो साक्षात तीजन बाई का बिम्ब सम्मुख कौंध जाता है. तीजन बाई वाचिक परंपरा की वह देदीप्यमान मशाल थीं, जिसने वेद-व्यास की संहिताओं को आदिवासियों की झोपड़ियों तक, और लोक की पगडंडियों को वैश्विक मंचों के वैभव तक पहुँचाया.

सांझ मौन ओढ़े खड़ी है, प्रभात की नव वेला भी उदासी में लिपटी है. अभी-अभी भारतीय लोक-चेतना का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र टूट गया. एक स्वर, जो दशकों से हमारी चेतना के बीहड़ों में गूंज रहा था, वह अनंत के सन्नाटे में विलीन हो गया. मानों साक्षात पंडवानी ने अपनी आँखों में करुणा के अश्रु भरकर अपने गांडीव को विश्राम दे दिया.

मेरे स्मृति के झरोखे में भोपाल के लोकरंग महोत्सव की वह धुंधली सी शाम आज भी दीपक की तरह जल रही है, जब उन्हें पहली बार सामने से देखने और सुनने का सुअवसर मिला था. उस दिन भोपाल की सर्द हवाएं तीजन बाई की तान से गर्माहट पा रही थीं. मंच पर उनका अवतरण किसी मानवीय उपस्थिति से इतर, लोक-देवताओं के आह्वान जैसा कौतुक उत्पन्न कर रहा था. हाथ में मोरपंखी तंबूरा लिये कई-कई बार उन्हें सामने से देखने का यह अनुभव लोक के उस अनथक प्रवाह को साक्षात जी लेने जैसा था, जहाँ इतिहास, पुराण और वर्तमान की दूरियां मिट जाती थीं.

तीजन बाई के कंठ में भारत की सदा सनातन, नित-नूतन सदानीरा लोक-संस्कृति का अमृतमयी लालित्य तो था ही, उसमें महाभारत के महापात्रों का हाहाकार और करुणा भी घुली हुई थी. उनका तंबूरा कभी अर्जुन का गांडीव बन जाता, कभी भीम की गदा, कभी दुशासन की छाती चीरती उंगली, तो कभी द्रौपदी के खुले केशों का करुण विलाप. अनुप्रास की छटा बिखेरती उनकी बोली में जब मोर भइया हो की गूंज उठती थी, तो श्रोता उस कालखंड में यात्रा करने लगते थे जहाँ मर्यादा और प्रतिशोध का महायुद्ध लड़ा जा रहा था.

शब्दों की तीखी कसावट. वाक्यों का एक अनूठा, अनथक प्रवाह. नए-नए बिम्बों का संधान. जब वे कीचक वध का प्रसंग छेड़ती थीं, तो मुखमंडल पर क्रोध की झुर्रियां किसी प्राचीन शिलाचित्र की भाँति जीवंत हो उठती थीं. स्वर चरम पर गूँजता. और फिर, अचानक एक गहरा ठहराव; जो कोलाहल के बीच भी शून्य पैदा कर देता था, और फिर अचानक ही उस शून्यता को चीरता हुआ उनका प्रखर स्वर गूंज उठता था. वे जब गाती थीं, तो ऐसा लगता था मानो छत्तीसगढ़ की लाल माटी के कण-कण से कंकड़ पत्थर उठकर सुरों के पहरेदार बन गए हों. उनकी प्रस्तुति में जो लालित्य था, वह किसी राजदरबार की नजाकत का नहीं, बल्कि सावन की पहली फुहार में भीगती धरती का सौंदर्य था.

शास्त्रीयता जहाँ नियमों के अनुशासन में बंधकर चमचमाती है, लोक वहाँ अपनी उन्मुक्तता और सहजता से रीझता है. तीजन बाई ने शास्त्र को लोक के आचमन से ऐसा पवित्र और व्यावहारिक बना दिया कि व्यास की संस्कृत का भव्य प्रासाद, छत्तीसगढ़ी की सोंधी सुवास से महक उठा. आज जब वह महान स्वर विलीन हो गया है, तो ऐसा लगता है कि हमारी लोक-परंपरा का एक सुदृढ़ स्तंभ ढह गया है. वह तंबूरा अब शांत है, जो कभी काल के गाल पर थाप देता प्रतीत होता था.

भारतीय संस्कृति के फलक पर तीजन बाई का अवदान इस रूप में हमेशा अक्षुण्ण रहेगा कि उन्होंने अभिजात्य और लोक के बीच के उस कल्पित पुल को अपनी हुंकार से ढहा दिया, जो कला को दीर्घाओं और महलों की बपौती समझता था.

उन्होंने सिद्ध किया कि कला का असली सिंहासन तो जनमानस का हृदय है. उन्हें पद्म श्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण जैसे सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिले. उनका जाना एक पूरी मौखिक वाचिक पीठ का सूना हो जाना है. वे साक्षात लोक की सरस्वती थीं, जिन्होंने अपने सुदीर्घ जीवन में पांडवों की गाथा गाते-गाते स्वयं को भी इतिहास के अमर पृष्ठों में दर्ज करा लिया. उनके पैरों के घुंघरू और तंबूरे की झंकार ने जो लकीर खींची है, वह भारतीय लोक-कला के इतिहास में हमेशा स्वर्ण अक्षरों में चमकती रहेगी.

(लेखक शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय)

विंध्य की डायरी

'आपरेशन प्रहार' के नीचे कैसे चल रही थी ड्रग्स की फैक्ट्री...?

डॉ. रवि तिवारी

रीवा जोन नशे की गिरफ्त में है .युवाओं को नशे ने जकड़ लिया है. हर तरह के अपराध नशे से होकर ही गुजरते है और इस पर प्रहार करने के लिये जोन के मुखिया ने आपरेशन प्रहार अभियान को मैदान में उतारा. कमजोर मुखबिर तंत्र और कुछ वर्दी धारियों ने अभियान को कमजोर कर दिया. पूरे जोन में आपरेशन प्रहार 2.0 के नीचे एमडी ड्रग्स की कथित फैक्ट्री का भंडाफोड़ हुआ, आरोपी भी दबोचे गये. 10 करोड़ से अधिक का ड्रग्स पकड़ा गया. कहीं न कहीं कमजोर मुखबिर तंत्र के कारण पुलिस पहले नहीं पहुंच पाई. सिंघम स्टाइल में काम कर रहे पुलिस अफसर का रेडार ने भी काम नही किया. महानगरों में बिकने वाला एमडी ड्रग्स मऊगंज और रीवा जिले में बन रहा था. आपरेशन प्रहार के साथ जन चौपाल-आपकी पुलिस आपके द्वार जैसे अभियान गांव-गांव चल रहे थे फिर भी मुखबिरी ड्रग्स की नहीं हुई. इससे साफ है कि पुलिस जनता की मित्र नहीं बन पाई. कहीं न कहीं डर के चलते आसपास की अपराधिक घटनाओं को पुलिस से साझा करने में आमजन भय खाते है. कथित एमडी ड्रग्स फैक्ट्री का भंडाफोड़ और माल के साथ आरोपियों की गिरफ्तारी निसंदेह काबिले तारीफ है पर पुलिस पर सवाल उठना भी लाजमी है. भोपाल तर्ज पर रीवा जोन में इतना बड़ा रैकेट काम कर रहा था और यहां के खुफिया तंत्र को भनक तक नहीं लगी. इसे स्थानीय पुलिस की एक बड़ी चूक ही कहा जाएगा. रीवा में अधिकारी सिंघम बने घूमते रहे और एक इनामी तस्कर को पड़ोसी राज्य की पुलिस शहर से उठा ले गई पर स्थानीय पुलिस को इनामी दूरबीन से खोजने पर भी नहीं मिल रहा था, गजब की पुलिस है.

वायरल चैट से गरमाई सियासत

ग्रामीण विकास विभाग में जिले से लेकर पंचायत स्तर पर किस तरह से पूरा सिस्टम काम करता है यह किसी से छिपा नही है. जब तक न पकड़े जाए तब तक हर कोई ईमानदारी का चोला ओढ़ कर मलाई खाता रहता है. सीधी में प्रभारी मंत्री के दौरे के पहले एक वायरल वाट्सअप चैट से सियासत गरमा गई है. दरअसल जनपद मझौली में जब एक उपयंत्री द्वारा डाटा फीडिंग के लिये फीस जमा करने का मैसेज किया तो हडकम्प मच गया. सोशल मीडिया में वायरल होते ही तरह-तरह की चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया. अंदर चर्चा है कि यह पैसे मंत्री की व्यवस्थाओं के लिये मांगे गये थे. सच्चाई जो भी हो सफाई का दौर भी चलता रहा. एक बात तो साफ हो गई कि किस तरह से पंचायत स्तर पर वसूली होती है. पूरे मामले को लेकर कांग्रेस ने भी सवाल खड़े करते हुए कहा कि अब भ्रष्टाचार ने शिष्टाचार का रूप ले लिया है. मामला दब जाता लेकिन प्रभारी मंत्री दिलीप जायसवाल ने यह कहते हुए इसे और हवा दे दी कि यह कांग्रेस का सोचा समझा प्लान है. पार्टी को बदनाम करने के लिये. जिसके बाद कांग्रेस भी हमलावर हो गई.

बरगद के नीचे रात में चौपाल

जनता अपनी समस्याओं के लिये प्रशासन की चौखट पर पहुंचती है. सुनवाई में केवल तारीख पर तारीख मिलती है और समस्या वहीं खड़ी रहती है केवल आवेदन का स्वरूप बदलता रहता है. जब से कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी रीवा में पदस्थ हुए है उसके बाद से जनता में एक उम्मीद जगी है. आन स्पाट फैसला करने वाले कलेक्टर इस बार जिले के दूरस्थ सीमावर्ती गांव कूड़ी में जनता से संवाद करने पूरे काफिले के साथ पहुंचे. अपनी स्टाइल में उन्होने बरगद के नीचे रात में चौपाल लगाई. जहा जनता-जनार्दन की समस्या सुनी भी गई और निराकरण भी हुआ. राज्य चिन्ह बरगद के नीचे घंटों चली चौपाल में खुलकर लोगों ने अपनी समस्या ही नही बताई बल्कि क्षेत्रीय समस्याओं को भी प्राथमिकता से रखा. कलेक्टर का यह अनोखा अंदाज चर्चा का विषय बना है वहीं शासन और प्रशासन के प्रति लोगो के मन में एक विश्वास भी पैदा हुआ है. जनता की समस्या के निराकरण को लेकर निचले अधिकारियों को अपनी नैतिक जिम्मेदारी भी समझनी होगी. नीचे से निराकरण होगा तो ऊपर तक शिकायतें नहीं पहुंचेगी.

अब महाराष्ट्र को मिलेगा नर्मदा का पानी

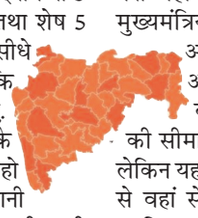

दिल्ली में नर्मदा परियोजना को लेकर महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश और राजस्थान के मुख्यमंत्रियों की बैठक हुई जिसमें तय हुआ कि महाराष्ट्र को उसके हक का पानी 2 भिन्न स्त्रोतों से मिलेगा. इसमें से 5 टीएमसी पानी नर्मदा-तापी योजना से तथा शेष 5 टीएमसी पानी गुजरात के उकाई बांध से सीधे लिया जाएगा. लेकिन इसके लिए शर्त है कि उकाई बांध पूरी क्षमता से भरा होना चाहिए.

वास्तव में नर्मदा परियोजना पूरी होने के बाद अन्य 3 राज्यों को पानी मिलना शुरू हो गया था किंतु महाराष्ट्र को एक बूंद भी पानी नहीं मिल रहा था. अब उसे मिलनेवाले 10 टीएमसी पानी का लाभ उत्तर महाराष्ट्र (खानदेश) के नंदूरबार, धुले व जलगांव जिलों के दुर्गम और सूखाग्रस्त क्षेत्रों को मिलेगा जिससे पेयजल व खेती की सिंचाई की समस्या हल हो सकेगी. उकाई बांध का पानी कैसे लाया जाए, इसके लिए कृति योजना बनाई जाएगी. महाराष्ट्र को एक बूंद भी पानी न देते हुए उस पर भारी रकम बकाया बताई जा रही थी. मध्यप्रदेश व गुजरात, महाराष्ट्र से पैसे की मांग कर रहे थे. महाराष्ट्र का कहना था कि उसके अधिकार का पानी मिले बिना वह पैसे नहीं देगा. बीजेपी शासित चारों राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठक में समाधान निकला. अधिकांश बकाया रकम माफ कर दी गई. अब महाराष्ट्र को केवल 27 करोड़ रुपए देना बाकी है. नर्मदा महाराष्ट्र के नंदूरबार जिले की सीमा से 54 किलोमीटर दूर प्रवाहित होती है लेकिन यह क्षेत्र सतपुड़ा का दुर्गम पहाड़ी इलाका होने से वहां से महाराष्ट्र तक पानी लाना असंभव है. इसलिए गुजरात से पानी लाने के अलावा विकल्प नहीं है. महाराष्ट्र ने यह पानी तापी घाटी की ओर मोड़ने का प्रस्ताव रखा. तब एक घाटी से दूसरी घाटी में पानी नहीं ले जाने के नियम को परे रखकर गुजरात और मध्यप्रदेश ने इसके लिए मंजूरी दी. इतने वर्षों से गुजरात, महाराष्ट्र के हिस्से का पानी इस्तेमाल कर रहा था, अब यह नर्मदा का जल महाराष्ट्र में आएगा.

निशानेबाज

समझो सच तो होगे खुशहाल, संघ वटवृक्ष, बीजेपी है डाल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि संघ का काम सिर्फ राष्ट्रभक्त अनुशासित स्वयंसेवक तैयार करना है. राजनीति से उसका कोई सीधा संबंध नहीं है.'

हमने कहा, 'देशवासी तो यही जानते हैं कि असली वटवृक्ष संघ है और बीजेपी उस वृक्ष की डाल ! संघ है फैक्ट्री और बीजेपी उसका माल! संघ के स्वयंसेवकों की संगठनशक्ति ही असली ताकत है. आरएसएस इनडायरेक्टली राजनीति चलाता है. वह मदरबोर्ड है तो बीजेपी मॉनिटर! आरएसएस ने पहले 1951 में जनसंघ बनाया जिसके अध्यक्ष डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी थे. संघ ने 1977 में समाजवादियों तथा कुछ पूर्व कांग्रेसी नेताओं का तालमेल जमाकर जनता पार्टी बनवाई थी. लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आंदोलन के पीछे संघ की ताकत थी. जब समाजवादी नेता मधु लिमये और राजनारायण ने दोहरी सदस्यता के मुद्दे पर आपत्ति जताई तो अटल बिहारी वाजपेयी और आडवाणी ने आरएसएस के प्रति अपनी पूर्ण

और अविचल निष्ठा दोहराते हुए मोरारजी देसाई की सरकार से इस्तीफा दे दिया. उन्होंने 1980 में बीजेपी बना ली. एक समय ऐसा भी था जब आरएसएस के लोग कहते थे कि संघ बाह्य विश्व या संघ से बाहर की दुनिया कैसी है, हम सोच भी नहीं सकते. आज वही आरएसएस दुनिया का सबसे बड़ा स्वैच्छिक संगठन बन गया है. संघ की सेंचुरी पूरी हो चुकी है फिर भी उसके स्वयंसेवक कहते हैं-संघ शक्ति युगे युगे !'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, बीजेपी में कुछ ऐसे भी नेता हैं जो संघ बैकग्राउंड के नहीं हैं. राजनीतिक ताकत बढ़ाने के लिए पार्टी अन्य दलों को तोड़फोड़ कर उनके सांसदों-विधायकों को अपने साथ लेती चली जा रही है. राजनीतिक स्वार्थ के फेविकाल से लोग जुड़ते चले जा रहे हैं.'

हमने कहा, 'मोदी और शाह इस प्रवाह को तेजी से आगे बढ़ा रहे हैं. यह सधी हुई रणनीति है जिससे देश में विपक्ष का सफाया हो जाए और एकमत से सरकार चले. विरोध या अवरोध कुछ भी न रहे. इधर सदन में बिल पेश किया और बगैर किसी चर्चा के मिनिटों में पास करा लिया! विपक्षी पार्टियों का बिखराव बीजेपी की ताकत को लगातार बढ़ा रहा है. जब हो दबाव या प्रलोभन, तो उजड़ता रहेगा विपक्ष का चमन !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12316 - डॉ. सागर खादीवाला

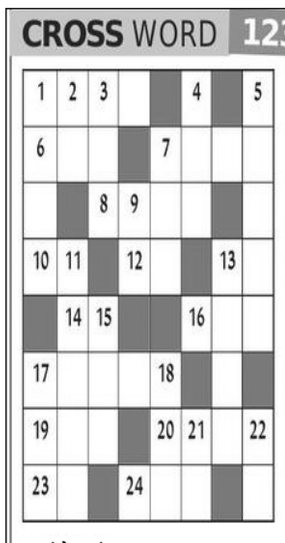

ऊपर से नीचे

1. एक उपकरण जिससे कोई द्रव पदार्थ धार या फुहारे के रूप में छोड़ा जाता है 2. एक वृक्ष का नाम 3. एक घंटे का साठवां भाग 4. घुड़की, दंड देने या हानि पहुंचाने आदि का भय दिखाना 5. नेवले के समान एक जंतु जो जल-स्थल दोनों में रहता है 7. स्थिर, अचल, पक्का 9. धार्मिक व्याख्यान, वह जो कहा जाए 11. वह प्रलय जिसमें सृष्टि का नाश होता है 13. कुल, वंश 15. मुसलमानी पद्धति के अनुसार होने वाला विवाह 17. महंगा, मराठी भाषा में ग्यारह की संख्या 18. बलवान, खूब हृष्टपुष्ट 21. गमन करना, प्रस्थान करना 22. अभिनेता, एक जाति

बाएं से दाएं

1. मिस्त्र देश के विशाल मकबरे जिसमें प्राचीन राज परिवार के सदस्यों के शवों को ममी के रूप में सुरक्षित रखा जाता था 6. चलने का भाव, प्रथा, प्रचलन 7. एक फल का नाम, जाम 8. निर्निमेष दृष्टि, स्थिर दृष्टि 10. वह कागज की गड्डी जिसमें 20 दस्ते हों (अं.) 12. बड़ी थाली 13. मौसी (उर्दू) 14. नुकसान, घाटा 16. मनुष्य, आदमी 17. जिसे छापकर प्रचलित न किया गया हो 19. झगड़ा 20. गणेश 23. सलाह, सम्मति 24. टकरा देना, लड़वाना

Solution 12315

अ	म	र	ल	ता		अ	नी
व		ति		ज	त्थे	दा	र
ती	ज		सा	म		ल	व
	ल		स	ह	म	त	
म	न	का		ल			स
हा		म	हा		स	द	मा
ज	मा	दा	र		मा		रो
न	ह	र		त	न	ख्वा	ह

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भाईयों के सहयोग से अचल संपत्ति में वृद्धि होगी. दाम्पत्य जीवन सुखमय मधुरतापूर्ण रहेगा. वर्ष के मध्य में कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी.सहकर्मियों की मदद रहेगी. वर्ष के अन्त में व्यवसाय में अनिश्चय की स्थिति का सामना करना पडेगा. आजीविका के क्षेत्र में अनावश्यक चिन्ता रहेगी. शत्रु पर विजय मिलेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन मधुरतापूर्वक रहेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों का शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यों में विवाद होगा, मन व्यथित रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से मेल मिलाप होगा,

मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना हितकर रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को समय अनुकूल एवं लाभदायक रहेगा.

मेष-आप अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास करेंगे, खर्च की अधिकता रहेगी, लाभ के नये मार्ग खुलेंगे, मिलन होगा, सुख संतोष बना रहेगा.

वृषभ- अधिकारी आपकी कार्यशैली से प्रसन्न होंगे, नियमित दिनचर्या रहेगी, इष्ट मित्रों का सहयोग रहेगा, मांगलिक कार्यों में खर्च की अधिकता रहेगी, श्रम साध्य होगा.

मिथुन- उत्तराधिकार संबंधी समस्या हल होने से राहत मिलेगी, घरेलू आवश्यकताएं की पूरी करने दौड़धूप करना पड़ेगा, पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा.

कर्क- दूसरों के दबाव में लिए फैसले मौका मिलते ही बदल देंगे, मित्र वर्ग उत्साहवर्धक सहयोग करेगा, जायजाद प्रापर्टी आदि कार्यों में सफलता प्राप्त होगी. संयम रखें.

सिंह- व्यापारिक समझौते भाग्योदय में सहायक रहेंगे, मन की बात करीबी से कहने पर तनाव कम होगा, किये गये प्रयासों में लाभ प्राप्त होगा. नए उपक्रमों का विकास होगा.

कन्या- वैवाहिक चर्चाओं में सफलता के आसार हैं, आपके बढ़ते प्रभाव से लोग ईर्ष्या करेंगे, परीक्षा प्रतियोगिता में परिश्रम अधिक करना होगा, उत्तम परिणाम प्राप्त होगा.

तुला- जोड़तोड़ करके काम कराने के चक्कर में नुकसान होगा, न्यायालयीन कार्यों में सफलता मिलेगी, आशा से अधिक परिश्रम करने पर लाभ होगा.

वृश्चिक- युवाओं को काम की तलाश में भटकना पड़ेगा, अपने काम को लेकर ज्यादा गंभरी होंगे, सरकारी विभाग में रूके कार्यों के बनने का योग है.

धनु- बढ़ते खर्च को पूरा करने में कठिनाई आयेगी, कर्ज लेने की स्थिति बन सकती है, कामकाज के प्रति अरूचि एवं उदासीनता रहेगी, सोचे हुए कार्यों में बाधा आयेगी.

मकर- बिना सोचे समझे नए काम में हाथ न डालें, लोगों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है, भाग्यवर्धक शुभ समाचार प्राप्त होगा, धार्मिक काय्र के प्रति रूचि रहेगी.

कुम्भ- अपने संपर्कों से रूके काम निकालने में सफल होंगें यात्रा का योग है. राजकीय प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, कोर्ट कचहरी के मामलों में सफलता मिलेगी.

मीन- जिद्दी रवैया तरक्की की राह में बाधक होगा, समाज में आपके कार्य की पहचान बनेगी, सामाजिक संबंधों में विस्तार होगा, नए संबंधों में मैत्री संबंध महत्वपूर्ण रहेंगें.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक हृष्टपुष्ट सुन्दर एवं मिलनसार होगा. मित्रों की संख्या सीमित होगी. खेलों के प्रति रूचि रखने वाला न्यायप्रिय होगा. किसी विशेष विद्या का ज्ञाता होगा. माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

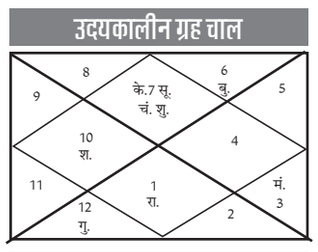

पंचांग

रा.मि. 22 संवत् 2083 आषाढ कृष्ण चर्तुदशी चन्द्रवासरे शाम 6/1, आर्द्रा नक्षत्रे रात 3/23, ध्रुव योगे दिन 4/39, विष्टि करणे सू.उ. 5/16, सू.अ. 6/44, चन्द्रचार मिथुन, शु.रा. 3,5,6,9,10,1 अ.रा. 4,7,8,11,12,2 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

आषाढ कृष्ण चर्तुदशी को आर्द्रा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, रूई, कपास, सूत, बिनौला, सन, सरसों, अरंडी, मूंगफली, घी, तेल, में, मंदी की चाल चलेगी, गेहूँ, जौ, चना, गुड, खांड, जायफल, हल्दी, में तेजी होगी. भाग्यांक 2489 है.

SUDOKU 7448

5	9		1		2		3	8
			4		5			
2								5
		3		5		4	8	
	7						1	
	5	8		6		9		
8								1
			2		9			
3	4		6		7		5	2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7447

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी